ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्

श्री गायत्री चालीसा
चित्रावली

मूल्य : ४-०० रुपया

वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ, युगदृष्टा, प्रातः स्मरणीय
परम पूज्य श्रीराम शर्मा आचार्य



श्री गायत्री परिवार एवं युग निर्माण योजना के संस्थापक परम पूज्य गुरुदेव श्रीराम शर्मा आचार्य जिन्होंने लुप्त प्रायः श्री गायत्री विद्या को अपने प्रबल पुरुषार्थ एवं सुदीर्घ साधना द्वारा पुनः प्रकाशित [illegible] सर्वसाधारण के लिये सुलभ एवं सुगम बनाया उनके चरणों में हमारा कोटि-कोटि नमन। जय गुरुदेव ! जय गुरुदेव !! जय गुरुदेव !!!

* श्री गायत्री चालीसा पाठ की महिमा *

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥

श्री गायत्री दिव्य शक्तियों की जननी हैं उनमें कितनी शक्तियां समाई हुई हैं, आज के समय में तो कोई विरला ही माई का लाल जानता होगा। प्राचीन ऋषि-मुनियों ने अपने-अपने साधनात्मक अनुभव के आधार पर उनकी महिमा का गान किया है। उसी महिमा का जनसाधारण को बोध कराने के लिये परम पूज्य गुरुदेव श्रीराम शर्मा आचार्य ने गायत्री चालीसा की रचना की है। इस गायत्री चालीसा का नियमित पाठ करने से श्रीगायत्री की शक्तियों का ज्ञान होता है। औषधि का गुण धर्म जानने के पश्चात् ही उसका लाभ उठाया जा सकता है। उसी प्रकार भगवती गायत्री की शक्तियों से लाभान्वित होने के लिये उनकी शक्तियों का महत्व समझना चाहिये। इसी आधार पर इस सचित्र गायत्री चालीसा की रचना की गई है। इसके नित्य पाठ से श्री गायत्री की मर्यादा, प्रकृति और शक्तियों की जानकारी मिलेगी। समुद्र मन्थन में मात्र १४ रत्न निकले थे किन्तु इस गायत्री मंत्र में २४ रत्न भरे पड़े हैं। उनका उपयोग करके अपने को श्रेष्ठ बनाना मनुष्य के अपने वश की बात है। अस्तु गायत्री उपासना का यह प्रथम चरण है।

श्रीगायत्री चालीसा का पाठ करने से हमारी यह धारणा दृढ़ होती है कि गायत्री देवमाता, वेदमाता एवं विश्वमाता है। इस धारणा से हमारी श्रद्धा, भक्ति तथा निष्ठा को बड़ा बल मिलता है। जिसको पारसमणि के महत्व का ज्ञान होता है, वही उसे प्राप्त करने का प्रयास करता है तथा उसका उपयोग करके लाभान्वित होता है। तो आइये ! हम सब भी गायत्री चालीसा का पाठ करें। उसमें वर्णित महिमा का गान करें चित्रों में उसका स्वरूप देखते हुए माता गायत्री का कृपा प्रसाद ग्रहण करें।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मां कश्चिद् दुख माप्नुयात ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

❀ वन्दे वेद मातरम् ❀

श्री गायत्री चालीसा



दोहा-ह्रीं, श्रीं, क्लीं, मेधा, प्रभा, जीवन ज्योति प्रचंड ।
शान्ति, क्रान्ति, जागृति, प्रगति, रचना शक्ति अखंड ॥१॥
जगत जननि, मङ्गल करनि, गायत्री सुखधाम ।
प्रणवों सावित्री, स्वधा, स्वाहा, पूरन काम ॥२॥

भूर्भुवः स्वः ॐ युत जननी ।
गायत्री नित कलिमल दहनी ॥
अक्षर चौबिस परम पुनीता ।
इनमें बसें शास्त्र, श्रुति, गीता ॥
शाश्वत सतोगुणी सत रूपा ।
सत्य सनातन सुधा अनूपा ॥
हंसारूढ़ सितम्बर धारी ।
स्वर्ण कान्ति शुचि गगन बिहारी ॥
पुस्तक पुष्प कमंडलु माला ।
शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला ॥
ध्यान धरत पुलकित हिय होई ।
सुख उपजत, दुख दुरमति खोई ॥
कामधेनु तुम सुर तरु छाया ।
निराकार की अद्भुत माया ॥
तुम्हरी शरण गहै जो कोई ।
तरै सकल संकट सों सोई ॥
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली ।
दिपै तुम्हारी ज्योति निराली ॥
तुम्हरी महिमा पार न पावैं ।
जो शारद शत मुख गुन गावैं ॥
चार वेद की मातु पुनीता ।
तुम ब्रह्माणी गौरी सीता ॥
महामन्त्र जितने जग माहीं ।
कोऊ गायत्री सम नाहीं ॥
सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकासै ।
आलस पाप अविद्या नासै ॥
सृष्टि बीज जग जननि भवानी ।
कालरात्रि वरदा कल्यानी ॥
ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते ।
तुम सों पावें सुरता तेते ॥
तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे ।
जननिहिं पुत्र प्राण ते प्यारे ॥
महिमा अपरम्पार तुम्हारी ।
जै जै जै त्रिपदा भय हारी ॥

पूरित सकल ज्ञान विज्ञाना ।
तुम सम अधिक न जग में आना ॥
तुमहिं जानि कछु रहै न शेषा ।
तुमहिं पाय कछु रहै न क्लेशा ॥
जानत तुमहिं, तुमहिं ह्वै जाई ।
पारस परसि कुधातु सुहाई ॥
तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाई ।
माता तुम सब ठौर समाई ॥
ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे ।
सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे ॥
सकल सृष्टि की प्राण विधाता ।
पालक पोषक नाशक त्राता ॥
मातेश्वरी दया व्रत धारी ।
तुम सन तरे पातकी भारी ॥
जापर कृपा तुम्हारी होई ।
तापर कृपा करें सब कोई ॥
मन्द बुद्धि ते बुधि बल पावें ।
रोगी रोग रहित ह्वै जावें ॥
दारिद मिटै कटै सब पीरा ।
नाशै दुःख हरै भव भीरा ॥
गृह कलेश चित चिन्ता भारी ।
नासै गायत्री भय हारी ॥
सन्तति हीन सुसन्तति पावें ।
सुख सम्पत्ति युत मोद मनावें ॥
भूत पिशाच सबै भय खावें ।
यम के दूत निकट नहिं आवें ॥
जो सधवा सुमिरें चित लाई ।
अछत सुहाग सदा सुखदाई ॥
घर वर सुख प्रद लहैं कुमारी ।
विधवा रहें सत्य व्रत धारी ॥
जयति जयति जगदम्ब भवानी ।
तुम सम और दयालु न दानी ॥
जो सद्गुरु सों दीक्षा पावें ।
सो साधन को सफल बनावें ॥
सुमिरन करें सुरुचि बड़भागी ।
लहैं मनोरथ गृही विरागी ॥
अष्ट सिद्धि नवनिधि की दाता ।
सब समर्थ गायत्री माता ॥
ऋषि मुनि जती, तपस्वी जोगी ।
आरत, अर्थी, चिंतित, भोगी ॥
जो जो शरण तुम्हारी आवें ।
सो सो मन वांछित फल पावें ॥
बल बुधि विद्या शील स्वभाऊ ।
धन वैभव यश तेज उछाऊ ॥
सकल बढ़ें उपजें सुख नाना ।
जो यह पाठ करै धरि ध्याना ॥



यह चालीसा भक्ति युत, पाठ करै जो कोय ।
तापर कृपा प्रसन्नता गायत्री की होय ॥



ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।

दोहा-ह्रीं, श्रीं, क्लीं, मेधा, प्रभा, जीवन ज्योति प्रचंड।
शान्ति, क्रान्ति, जागृति, प्रगति, रचना शक्ति अखंड॥१॥



हे महासरस्वती, महालक्ष्मी तथा महाकाली रूपों में स्थित श्री गायत्री माँ आप हमारे जीवन में ज्ञान ज्योति प्रकाशित करने वाली हो तथा हमें मेधा, प्रभा, प्रतिभा, शान्ति, क्रान्ति, जाग्रति, प्रगति व अखण्ड शक्ति प्रदान करने वाली हो।—1

जगत जननि, मङ्गल करनि, गायत्री सुखधाम।
प्रणवों सावित्री, स्वधा, स्वाहा, पूरन काम ॥२॥



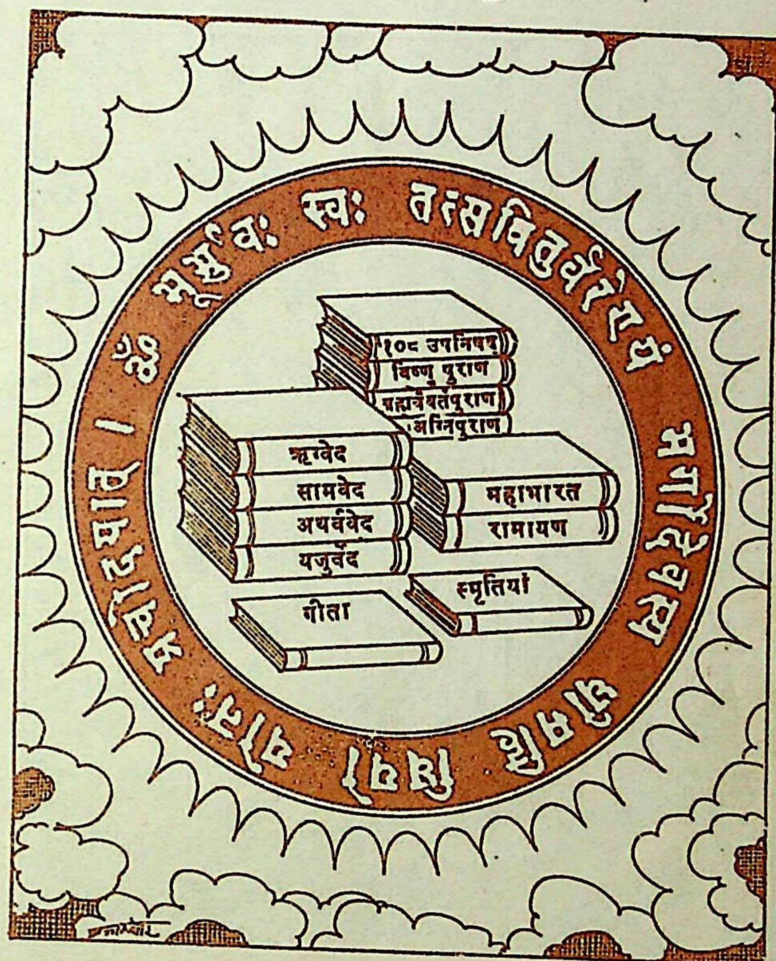
आप विश्वमाता के रूप में जगत का कल्याण करती हो। आप में समस्त सुख निवास करते हैं। हे सावित्री, स्वाहा, स्वधा! स्वरूपा पूर्णकाम माँ गायत्री, हम आपको प्रणाम करते हैं।—२

भूर्भुवः स्वः ॐ युत जननी ।
गायत्री नित कलिमल दहनी ॥



पृथ्वी, पाताल और स्वर्ग में जहाँ जहाँ ओंकार व्याप्त है, वहाँ आप भी गायत्री के रूप में निवास करती हो और कलि के प्रभाव को नष्ट करती हो ।—३

अक्षर चौबिस परम पुनीता ।
इनमें बसें शास्त्र, श्रुति, गीता ॥



आपके (गायत्री के) जो २४ अक्षर हैं वे परम पुनीत होने से पुण्य प्रदान करने वाले हैं। इन अक्षरों में समस्त शास्त्र, श्रुति और गीता आदि का समावेश है। जो व्यक्ति शास्त्र आदि पढ़ने में असमर्थ हैं, वे आपके इन २४ अक्षरों के जप व स्मरण मात्र से शास्त्र अध्ययन का फल प्राप्त कर लेते हैं।—४

शाश्वत सतोगुणी सत रूपा ।
सत्य सनातन सुधा अनूपा ॥



आपके यह २४ अक्षर शाश्वत हैं, सत्वगुण सम्पन्न हैं, सनातन हैं। सत्य का मार्ग प्रदर्शन करने वाले हैं तथा अमृततुल्य कल्याणकारी व सुपथ पर चलाने वाले हैं।—५

हंसारूढ़ सितम्बर धारी।
स्वर्ण कान्ति शुचि गगन बिहारी॥



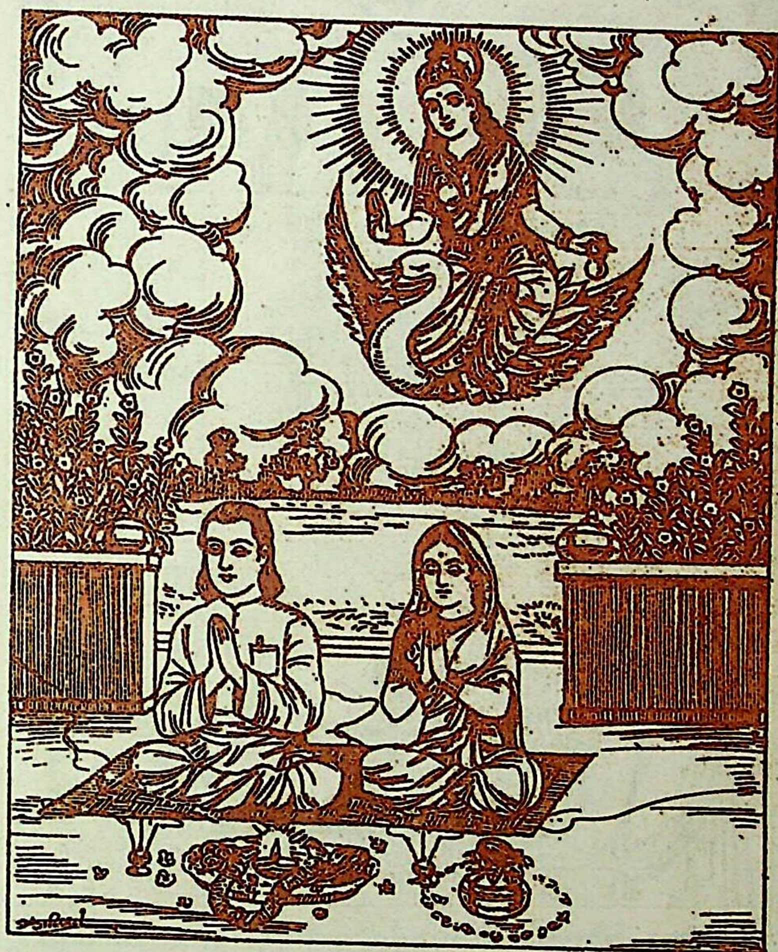
हे श्वेताम्बर धारण करने वाली, स्वर्ण कान्ति से युक्त, हंस पर विराजित होकर गगन में बिहार करने वाली माँ गायत्री !—६

पुस्तक पुष्प कमंडलु माला ।
शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला ॥



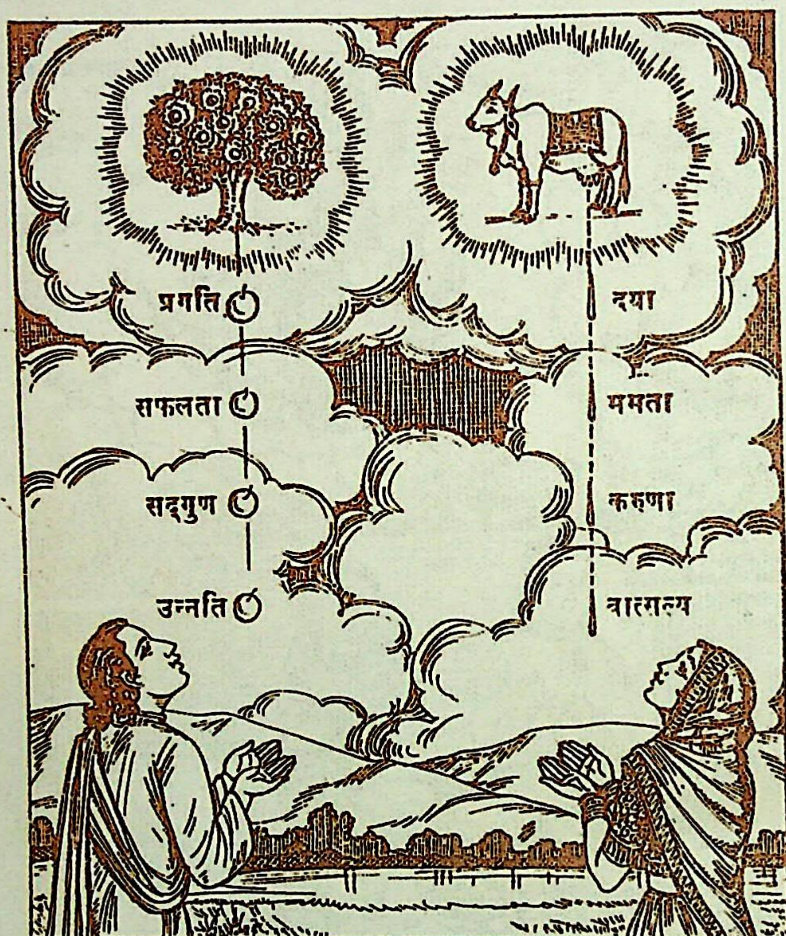
आपके एक हाथ में पुस्तक, दूसरे में पुष्प, तीसरे में कमण्डलु तथा चौथे हाथ में माला सुशोभित है । हे शुभ्रवर्णा, हे विशाल नेत्रों वाली गायत्री माँ ! —७

ध्यान धरत पुलकित हिय होई। सुख उपजत, दुख दुरमति खोई ॥



आपके इस स्वरूप का ध्यान करने से हमारा हृदय पुलकित हो जाता है। हमारा हृदय हर्ष और उत्साह से भर उठता है। क्लेश और दुष्प्रवृत्तियों का नाश हो जाता है। हमें सुख सम्पत्ति प्राप्त होती है।—८

कामधेनु तुम सुर तरु छाया।
निराकार की अद्भुत माया॥



जिस प्रकार कल्पवृक्ष और कामधेनु मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं, उसी प्रकार आप भी अपने साधकों की समस्त सात्विक मनोकामनाओं को सिद्ध करती हैं। आप निराकार और निर्विकार हैं, फिर भी आपकी माया अपरम्पार है। वह ऐसी अद्भुत है कि दृष्टिगोचर नहीं होती, अनुभव की जा सकती है।—६

तुम्हरी शरण गहै जो कोई।
तरै सकल संकट सों सोई॥



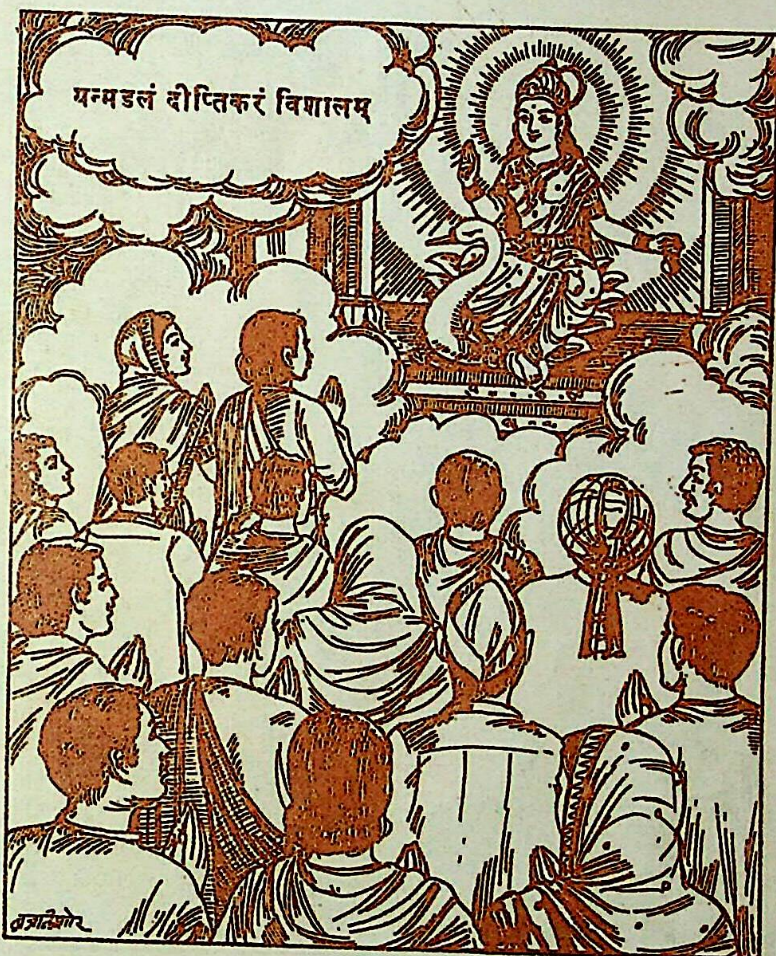
जो कोई व्यक्ति आपकी शंरण में आता है वह समस्त संकटों और दुखों से मुक्त हो जाता है और सुख-शान्ति पूर्वक जीवन व्यतीत करता है।—१०

सरस्वती लक्ष्मी तुम काली ।
दिपै तुम्हारी ज्योति निराली ॥



हे माँ ! आप ही सरस्वती हो, आप ही लक्ष्मी हो, तथा आप ही महाकाली हो। इन तीनों स्वरूपों में आपकी दिव्य ज्योति निराले रूप में ही देदीप्यमान होती है।—११

तुम्हरी महिमा पार न पावैं ।
जो शारद शत मुख गुन गावैं ॥



आपकी महिमा अपरम्पार है, इसका कोई पार नहीं । शेष और शारदा द्वारा अनेक मुखों से गान करने पर भी आपकी महिमा का पार नहीं पा सकते ।—१२

चार वेद की मातु पुनीता ।
तुम ब्रह्माणि गौरी सीता ॥



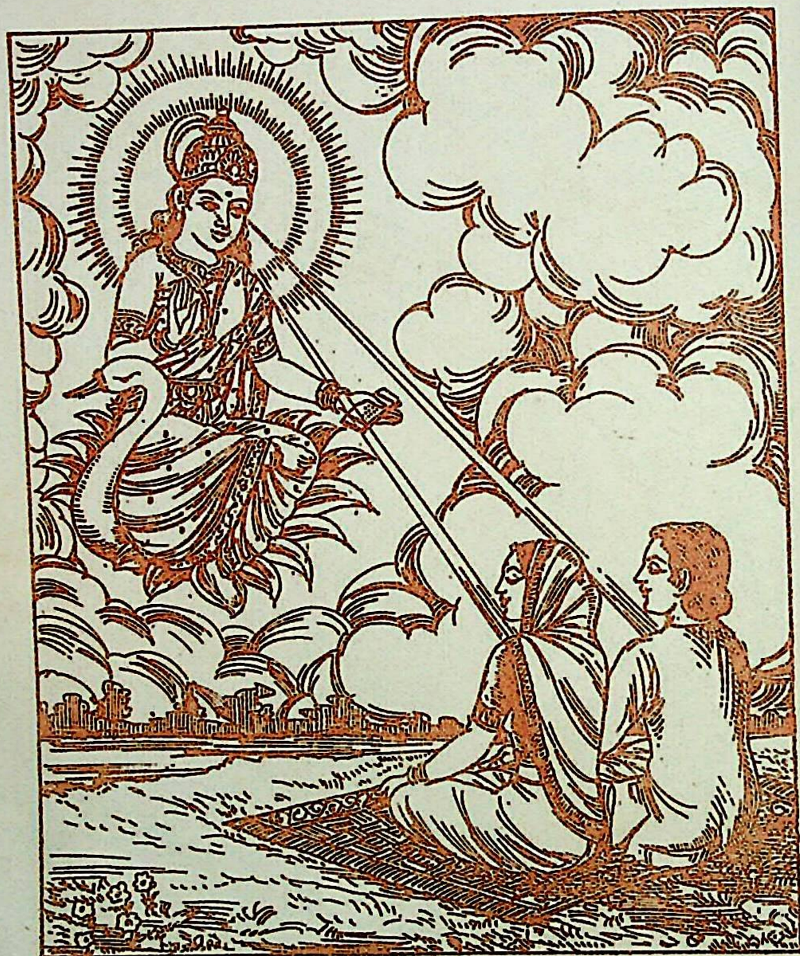
आप चारों वेदों (ऋग्, यजु, साम, अथर्व) की जननी हो। आप ब्रह्माणी हो, गौरी हो तथा आप ही सती शिरोमणि सीता स्वरूपा हो।—१३

महामन्त्र जितने जग माहीं ।
कोऊ गायत्री सम नाहीं ॥



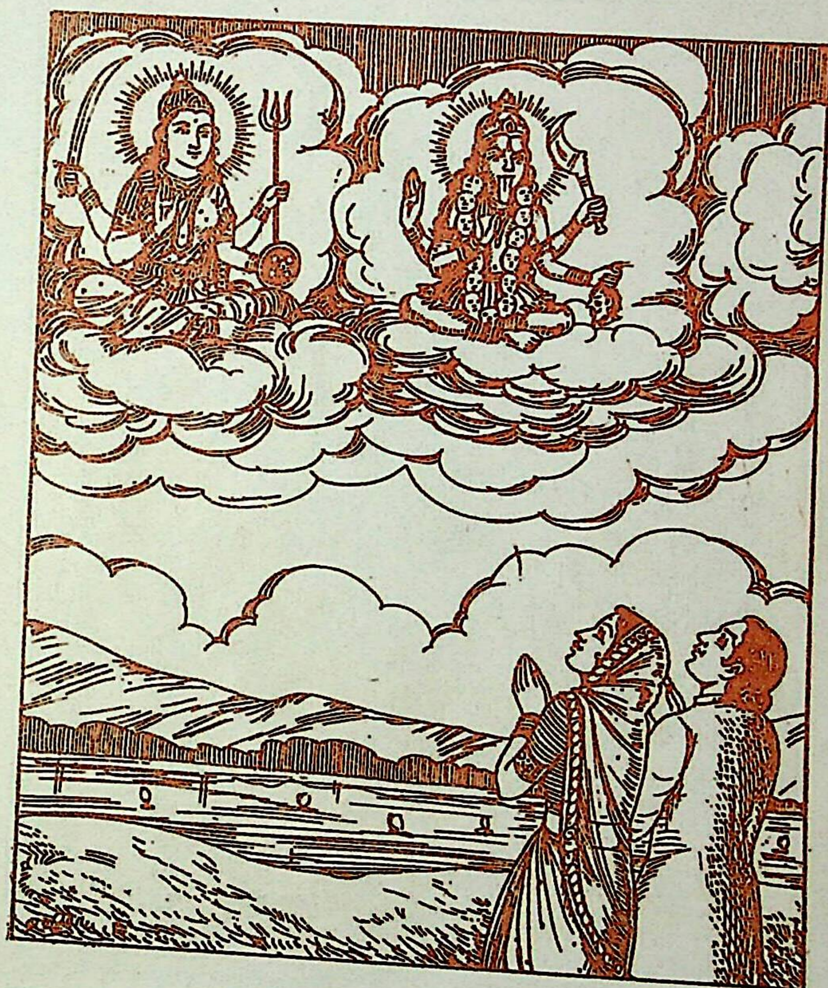
विश्व में जितने भी मंत्र हैं, उनमें आपके (गायत्री मंत्र) समान न तो अतीत में कोई था न वर्तमाम में है और न भविष्य में होगा। आप समस्त मन्त्रों की शिरोमणि हैं।—१४

सुमिरत हिय में ज्ञान प्रकासै ।
आलस पाप अविद्या नासै ॥



इस मंत्र के (गायत्री मंत्र) सतत् जप से मानव हृदय में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है। पाप तथा अविद्या रूपी अन्धकार का नाश हो जाता है। निष्क्रियता समाप्त हो जाती है और स्फूर्ति की प्राप्ति होती है। पुण्य एवं विद्या प्राप्त होती है।—१५

सृष्टि बीज जग जननि भवानी ।
कालरात्रि वरदा कल्यानी ॥



हे माँ, आप सृष्टि के बीज रूप में जगत जननी हैं। हे भवानी आप ही काल रात्रि हैं तथा आप ही विश्व का कल्याण करने वाली हैं।—१६

ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते।
तुम सों पावें सुरता तेते॥



हे सर्वशक्तिवान आद्याशक्ति, ब्रह्मा को सृजन, विष्णु को पालन तथा शिव को संहार करने की शक्ति आपने ही प्रदान की है। इनके अतिरिक्त अन्य सुरगणों को भी सुरता आपकी ही प्रदान की हुई है।—१७

तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे ।
जननिहिं पुत्र प्राण ते प्यारे ॥



हे दयामयी माँ ! आप भक्तों की एकमात्र आश्रयदाता हैं । भक्त आपके हैं तथा आप भक्तों की हैं । आपको ये भक्त पुत्र प्राणों से भी अधिक प्रिय हैं ।—१८

महिमा अपरम्पार तुम्हारी ।
जै जै जै त्रिपदा भय हारी ॥



हे माता गायत्री, आपकी महिमा का पार नहीं पाया जा सकता । समस्त भय समूह को नष्ट करने वाली त्रिपदा गायत्री माता आपकी केवल जय जयकार करने से समस्त भय भाग जाते हैं ।—१६

पूरित सकल ज्ञान विज्ञाना ।
तुम सम अधिक न जग में आना ॥



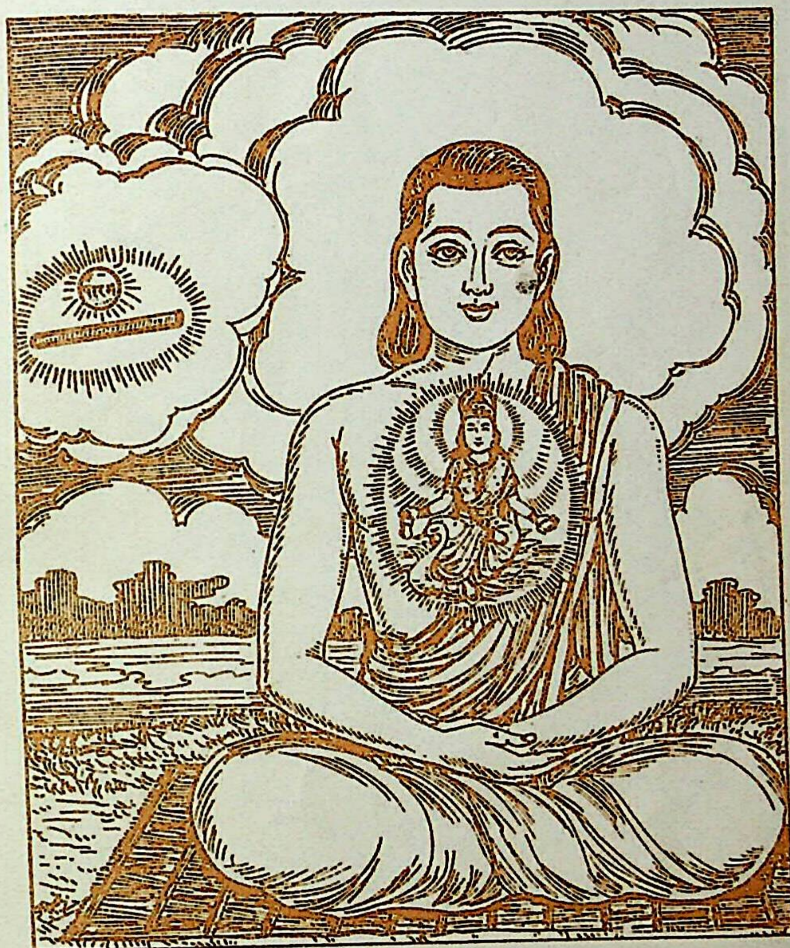
इस अखिल विश्व ब्रह्माण्ड में जो भी ज्ञान-विज्ञान व्याप्त है वह सब आपकी ही प्रभुता है इस विश्व में आपसे बड़ा कोई तत्व नहीं है ।—२०

तुमहिं जानि कछु रहै न शेषा।
तुमहिं पाय कछु रहै न क्लेषा॥



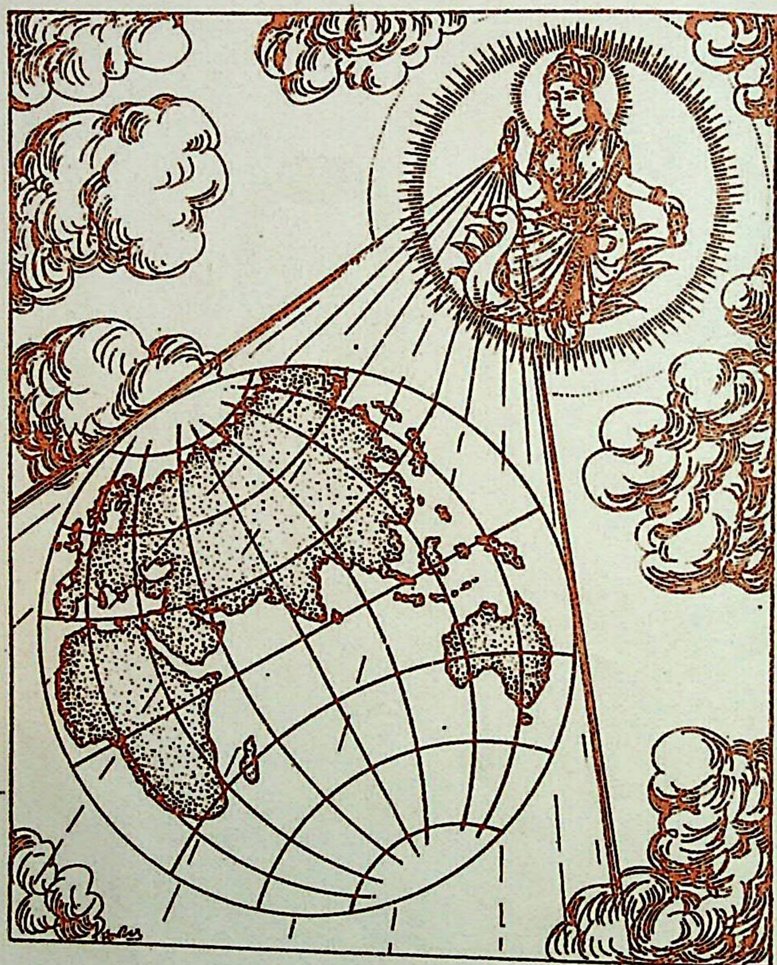
हे ज्ञानेश्वरी, आप अनन्त ज्ञान की भण्डार हैं। आप को जान लेने के पश्चात् ऐसा कुछ शेष नहीं रहता जिसे जाना जाय। आपको प्राप्त कर लेने के पश्चात् आपको जान लेने वाला निष्काम हो जाता है उसे कुछ भी अप्राप्य नहीं रहता।—२१

जानत तुमहिं, तुमहिं है जाई ।
पारस परसि कुधातु सुहाई ॥



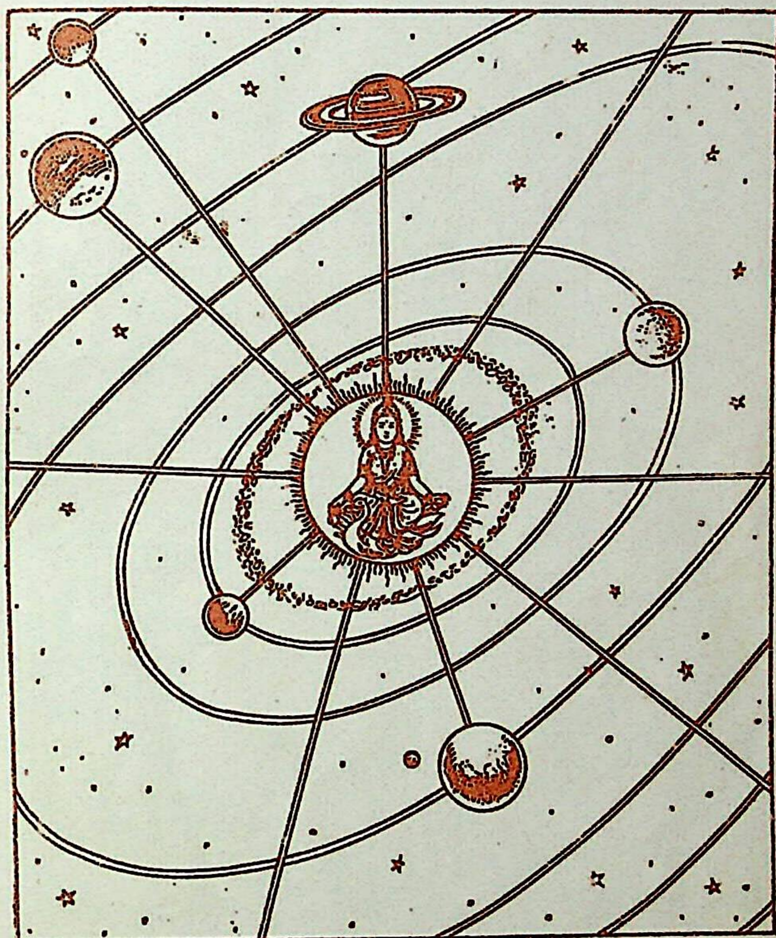
हे सर्वोच्च सत्ता धारिणी माते, आपका ज्ञान हो जाने पर साधक की सत्ता आप में ही समा जाती है उसका कोई पृथक अस्तित्व नहीं रह जाता । जिस पारसमणि के स्पर्श से कुधातु भी स्वर्ण बन जाती है उसी भाँति आपका साधक भी साध्यमय हो जाता है ।—२२

तुम्हरि शक्ति दिपै सब ठाईं ।
माता तुम सब ठौर समाईं ॥



आपकी दिव्य शक्ति सर्वत्र व्याप्त है। तीनों लोकों में कोई स्थान ऐसा नहीं है जहां आपकी दिव्य शक्ति का प्रकाश न हो। हे सर्वव्यापिनी मां गायत्री आप तीनों लोकों में समाई हुई हैं।—२३

ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे ।
सब गतिवान तुम्हारे प्रेरे ॥



विश्व ब्रह्माण्ड के समस्त ग्रह नक्षत्र आपकी ही गति से गतिमान हैं, तथा जीव सृष्टि के समस्त क्रिया-कलाप आपकी प्रेरणा से हो रहे हैं ।—२४

सकल सृष्टि की प्राण विधाता ।
पालक पोषक नाशक त्राता ॥



आप समस्त सृष्टि को प्राणवान बनाये हुई हैं आपकी ही प्रेरणा से सृष्टि का सृजन, पालन और संहार होता है। इस संसार से अपने भक्त को आप ही पार लगाती हैं।—२५

मातेश्वरि दया व्रत धारि।
तुम सन तरे पातकि भारि॥



हे दयामयी माँ ! आप दया का व्रत धारण किये हुए हो। आप अत्यन्त दयावान हो। आपकी दया और कृपा से बड़े से बड़ा पातकी भी संसार सागर से पार हो जाता है।—२६

जापर कृपा तुम्हारी होई ।
तापर कृपा करें सब कोई ॥



जिस पर आपकी कृपा होती है, उस पर सभी कृपा करते हैं । बलवान से बलवान विरोधी भी उसका बाल बांका नहीं कर सकता ।—२७

मन्द बुद्धि ते बुधि बल पावैं ।
रोगी रोग रहित है जावैं ॥



जो व्यक्ति मन्द बुद्धि, विद्याभ्यास में निर्बल तथा विक्षिप्त ही क्यों न हो आपकी शरण में आने पर एवं आपके महामंत्र गायत्री मंत्र का जप करने से मेधावी होकर विद्याभ्यास करने में पूर्ण समर्थ हो जाता है तथा रोगी रोग मुक्त होकर पूर्ण स्वस्थ हो जाता है ।—२८

दारिद्र मिटै कटै सब पीरा ।
नाशै दुःख हरै भव भीरा ॥



कैसा भी दुखी और निर्धन व्यक्ति हो, आपकी शरण में आने पर उसके समस्त अभाव मिट जाते हैं तथा दुखों का निवारण हो जाता है, साथ ही भव बन्धन से भी मुक्त हो जाता है ।—२६

गृह कलेश चित चिन्ता भारी ।
नासै गायत्री भय हारी ॥



हे विघ्न विनाशिन माँ, आपके अनुग्रह से पारिवारिक कलह एवं समस्त दुश्चिन्ताऐं दूर हो जाती हैं। हे अभयदायिनी शक्ति आप अपने जन के भय समूह को पलभर में नष्ट कर देती हो।—३०

सन्तति हीन सुसन्तति पावें ।
सुख सम्पति युत मोद मनावें ॥



आपकी आराधना करने वाले व्यक्ति को आप सुसन्तति प्रदान करती हो, आपका आराधक दैवी सम्पत्तियाँ प्राप्त करता है और आनन्दमय जीवन व्यतीत करता है ।—३१

भूत पिशाच सबै भय खावैं।
यम के दूत निकट नाहिं आवैं॥



आपके मंत्र (गायत्री मंत्र) जप करने से भूत पिशाचादि दुष्ट आत्माऐं भयभीत होकर भाग जाती हैं। गायत्री मंत्र के जपकर्त्ता के निकट यम-दूत भी नहीं आ सकते क्योंकि वह तो गायत्री मंत्र के जप के प्रभाव से वैकुण्ठधाम जाने का अधिकार प्राप्त कर लेता है।—३२

जो सधवा सुमिरें चित लाई ।
अछत सुहाग सदा सुखदाई ॥



सौभाग्यवती स्त्री गायत्री चालीसा का एकाग्र चित्त से पाठ करती है वह अखण्ड सौभाग्य प्राप्त करती है। दाम्पत्य सुख भोगती हुई अपने जीवन को सार्थक बनाती है।—३३

घर वर सुख प्रद लहैं कुमारी ।
विधवा रहैं सत्य व्रत धारी ॥



जो कुमारी कन्याऐं इस चालीसा का पाठ करती हैं उन्हें सुन्दर पति एवं सम्पन्न घर मिलता है । जो विधवा स्त्री इस चालीसा का पाठ करती है, उसका सतीत्व रूपी सत्य धर्म सुरक्षित रहता है ।—३४

जयति जयति जगदम्ब भवानी।
तुम सम और दयालु न दानी।।



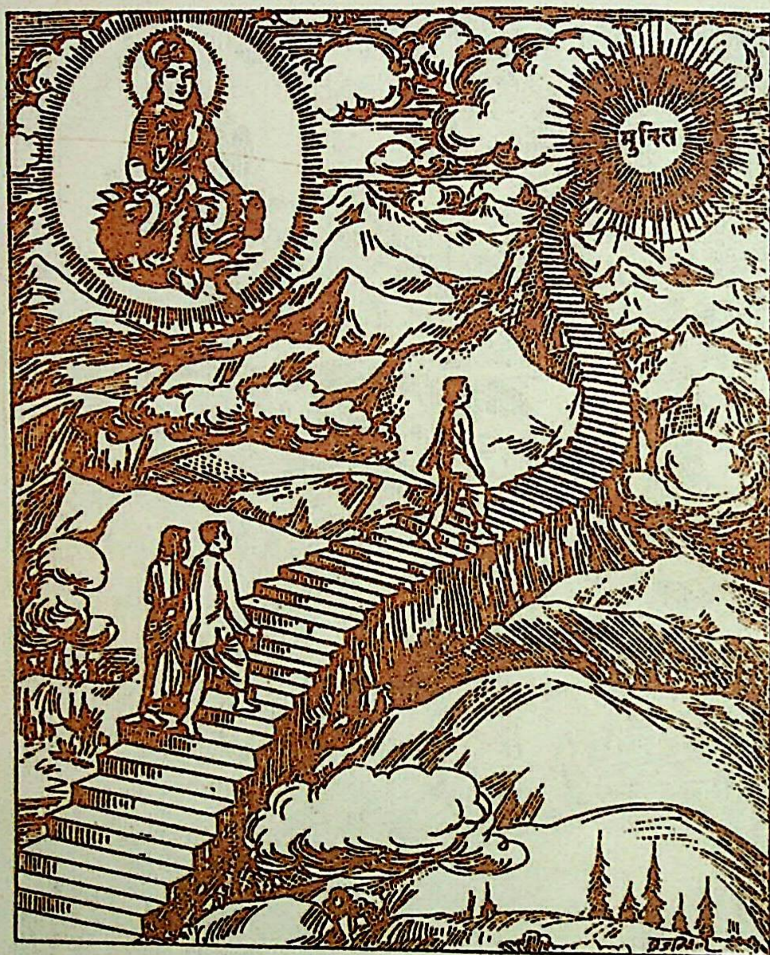
हे जगदम्बे, हे भवानी आपकी जय हो, जय हो। हे दयामयी, आपके समान दयावान, दानी और उदार अन्य कोई नहीं है।—३५

जो सद्गुरु सों दीक्षा पावें ।
सो साधन को सफल बनावें ॥



जो व्यक्ति सद्गुरुदेव से गायत्री मंत्र की दीक्षा प्राप्त करता है, उसकी सभी साधनायें सफल होती हैं। सद्गुरुदेव के प्राप्त न होने पर आप ही को गुरु रूप मानकर साधना करता है उसके सभी कार्य सफल होते हैं।—३६

सुमिरन करें सुरुचि बड़भागी ।
लहैं मनोरथ गृही विरागी ॥



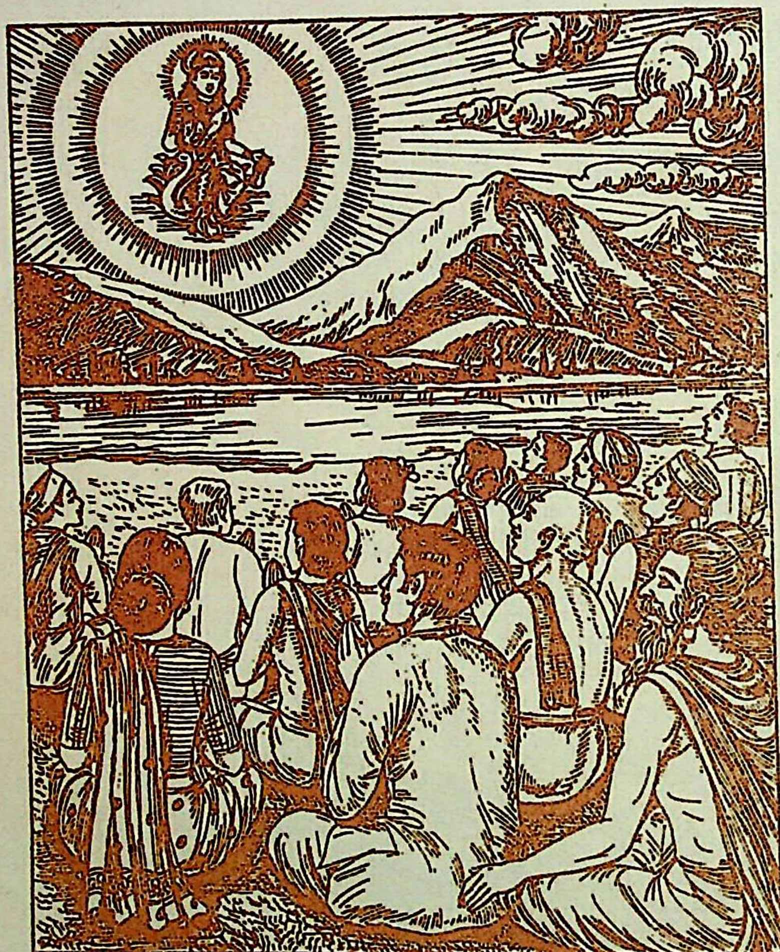
हे गायत्री माता ! जो व्यक्ति सहज़ श्रद्धा सुरुचि एवं निष्ठापूर्वक आपका स्मरण करता है, वह परम सौभाग्यशाली है । हे माँ, आपके स्मरण करने से गृहस्थ एवं गृह त्यागी दोनों ही मनोनुकूल श्रेष्ठ अनुदान प्राप्त करते हैं ।—३७

अष्ट सिद्धि नवनिधि की दाता ।
सब समर्थ गायत्री माता ।।



हे वरदायिनी माँ ! आप अपने भक्तों को आठ प्रकार की सिद्धियाँ (अणिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्रकाम्य, वशिता एवं श्रुत, दृष्ट शक्ति प्रेरणा तथा नौ निद्धि (शंख, मकर, कच्छप, पद्म, महापद्म, मुकुन्द कुन्द, नील, चर्या) प्रवान करने में समर्थ हैं ।—३८

ऋषि मुनि जती, तपस्वी जोगी ।
आरत, अर्थी, चिंतित, भोगी ।।



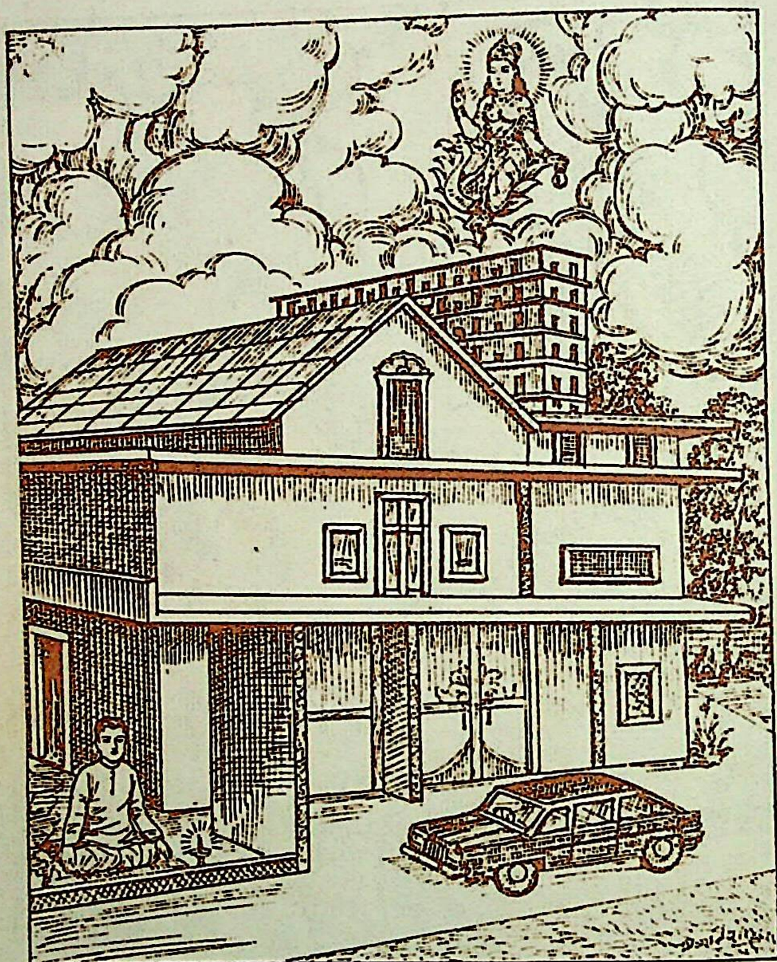
ऋषि, मुनि, यति, तपस्वी, योगी, सिद्धजन तथा दुखी, अर्थ की इच्छा रखने वाला, चिन्ता मग्न तथा संसारी—३९

जो जो शरण तुम्हारी आवैं ।
सो सो मन वांछित फल पावैं ।।



जो-जो भी आपकी शरण में आता है वह मनोनुकूल फल प्राप्त कर लेता है ।—४०

बल बुधि बिद्या शील स्वभाऊ ।
धन वैभव यश तेज उछाऊ ।।



हे मातेश्वरी ! तेरी कृपा से बलवान, बुद्धिमान, विद्वान, शीलवान ये सभी अर्थ; वैभव, यश, तेजस्विता तथा उत्साह प्राप्त करते हैं—४१

सकल बढ़ें उपजें सुख नाना ।
जो यह पाठ करै धरि ध्याना ॥

यह चालीसा भक्ति युत, पाठ करै जो कोय ।
तापर कृपा प्रसन्नता गायत्री की होय ॥



जो व्यक्ति श्रद्धा निष्ठापूर्वक आपका ध्यान करते हुए इस गायत्री चालीसा का नित्य पाठ करते हैं वे श्रेय और प्रेय (सांसारिक सुख एवं पारलौकिक सुख) दोनों ही प्राप्त करते हैं तथा उन पर सदैव आपका वरदहस्त बना रहता है ।—४२

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं,
भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।



अन्धकार में प्रकाश देने वाली वेदमाता, रक्षक, प्राणाधार, दुखनाशक, आनन्ददायक, हम आपके सुन्दर दिव्य एवं तेजोमय रूप का ध्यान करते हैं। आपको प्राणार्पण करते हैं। अर्थात् आपको सब कुछ सौंपते हैं। जिससे हमारी बुद्धि स्थिर हो सके। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।

गायत्री आर्य संस्कृति की माता एवं यज्ञ सनातन धर्म का पिता है ।

"श्रेष्ठ गुण सम्पन्न माता पिता से श्रेष्ठ सन्तान का जन्म होता है ।" ईश्वरीय विधान के अनुसार अपना चरित्र निर्माण करना ही मानव जीवन का प्रधान उद्देश्य है । क्योंकि चरित्रवान एवं आचरणशील व्यक्ति को ही दैवी सम्पत्तियों का अजस्र अनुदान प्राप्त होता है । वर्ना वह ईश्वरीय सत्ता न स्तुति से प्रसन्न होती है और न निन्दा से क्रोधित । वह तो कर्मानुसार ही फल देती है । वह परमोच्च सत्ता सर्वव्यापी है अतः मनुष्य को गुप्त रूप से भी पाप नहीं करना चाहिये ।

ॐ—परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ नाम और स्वरूप है । ॐ परमात्मा को हृदय में धारण करने की प्रेरणा देता है ।

भूर्—समानता तथा एकता का प्रतीक है । यह हमें निर्देशित करता है कि हमें दूसरों के साथ वही व्यवहार करना चाहिये जैसा कि हम दूसरों से अपने प्रति चाहते हैं, समानता के आधार पर वंश, जाति, नाम, समुदाय, स्त्री, पुरुष किसी को भी छोटा बड़ा नहीं समझना है, अच्छे बुरे कर्म से ही ऊँच-नीच की पहचान करनी चाहिये ।

भुवः—मनुष्य को कर्म करने का अधिकार है, फल देने वाला परमात्मा है । आनन्द का सर्वोत्तम केन्द्र कर्त्तव्य पालन को ही मानना चाहिये न कि मनोनुकूल परिस्थितियों से प्राप्त सुख को । कर्त्तव्य कर्म को लक्ष्य मानकर तदनुसार कर्म करने वाला कर्मयोगी सदैव आत्मतुष्ट रहता है ।

स्वः—यह शब्द हमें बोध कराता है कि हमें प्रतिकूल तथा अनुकूल परिस्थितियों को शुद्ध स्थिर एवं समतुल्य बनाना चाहिये ।

तत्—से तात्पर्य है कि मनुष्य पर हर समय मृत्यु गहराती रहती है । इस समय जो स्वांस चल रहा है, वह दूसरे क्षण बन्द हो सकता है । अतः हे प्राणी ! तुझे अपने जीवन का श्रेष्ठ उपयोग करना चाहिये । क्षणिक सुख के लिए भी पाप नहीं करना चाहिये ।

सवितुर्—गायत्री मंत्र का यह पद हमें अवगत कराता है कि व्यक्ति को तेजस्वी, पुरुषार्थी एवं बलवान बनना चाहिये । स्वास्थ्य, विद्या, धन, चतुराई, यश, सत्य तथा साहस आदि गुणों को धारण करना चाहिये ।

वरेण्यं— यह पद हमें बोध देता है कि "मनुष्य का जैसा चिन्तन होता है वह वैसा ही बन जाता है ।" विचार एक साँचे के समान है तथा मानव जीवन गीली मिट्टी के समान

है। अतः मनुष्य जैसा चिन्तन करता है, साँचे में उसी प्रकार ढल जाता है। उसी के अनुसार वह आचरण करता है तथा वैसे ही मित्र भी प्राप्त करता है। अतः हमें उन्हीं विचारों, स्थितियों, व्यक्तियों का वरण करना चाहिये जो श्रेष्ठ हों।

भर्गो—यह बताता है कि मनुष्य को दुष्कर्मों से सावधान रहकर निष्पाप बनना चाहिये। पापों का परिणाम देखकर उनसे घृणा करनी चाहिये। संसार के समस्त दुःख ताप पापों के ही परिणाम हैं। इसलिये जिन्हें दुःखों से भय और सुखों की इच्छा है उन्हें समस्त पापों को जला डालना चाहिये।

देवस्य—परमात्मा की इस पवित्र सृष्टि में जो कुछ भी है वह पवित्र और आनन्दमय है। अतः इस सृष्टि को पवित्र दृष्टि से देखो। मानव द्वारा उत्पन्न की हुई विकृतियों को दूर करके ईश्वरीय श्रेष्ठता को विकसित और प्रसारित करो। यही श्रेष्ठ कर्म है। इस देव कर्म को करने से मनुष्य देवता बन जाता है।

धीमहि—का अर्थ है, धारण करना, ग्रहण करना अर्थात् हमें सब प्रकार की पवित्र शक्तियों को ग्रहण करना चाहिये। संसार में अनेक भौतिक सम्पदायें हैं यथा–धन, पद, वैभव, शारीरिक बल, संगठन, शस्त्र विद्या, बुद्धि बल आदि इनकी प्राप्ति से सुख मिलता है, किन्तु यह सब स्थाई नहीं हैं–तनिक से आघात से नष्ट हो जाते हैं। आध्यात्मिक गुण-धर्म के फलस्वरूप जो सुख प्राप्त होता है, वह स्थाई होता है। इसी सम्पदा को शास्त्रों ने "दैवी सम्पदा" कहा है। अतः हमें अपना भण्डार इसी दैवी सम्पदा से भरना चाहिये।

धियो—यह शब्द सद्बुद्धि का प्रेरक है। मानव मस्तिष्क में अनेक विचार धारायें टकराती हैं। देश, काल, पात्र एवं परिस्थिति के अनुसार जो विचारधारा उचित जान पड़ती है, वही दूसरी परिस्थिति में अनुचित प्रतीत होती है। अतः हमें न्याय के आधार पर उचित निर्णय लेना चाहिये।

योनः—यह पद हमें बोध कराता है कि परमात्मा ने हमें जो शक्ति और सामर्थ्य प्रदान की है उसे अपने हित में कम से कम एवं शेष को निःस्वार्थ भाव से परमार्थ में नियोजित कर देनी चाहिये। प्रकृति प्रदत्त विभूतियों से हम धन, यश, पुण्य तथा सुख अवश्य प्राप्त करें किन्तु अधिकांश में उन्हें लोकहित में ही समर्पित कर देना चाहिये।

प्रचोदयात्—पद का अर्थ है कि मानव सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा परमात्मा से प्राप्त करता रहे तथा परमात्मा से प्रार्थना करता रहे कि हे प्रभु! मुझे सद्बुद्धि प्रदान करिये ताकि मैं उस सद्बुद्धि से प्रेरित हुआ सन्मार्ग पर चलता रहूँ एवं अन्य जनों को भी सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता रहूँ।

साधकों को विश्वमाता श्री गायत्री जी की उपासना निष्कामभाव, भक्तिभाव एवं अटल श्रद्धा से करनी चाहिये।



सकाम उपासना करना योग्य नहीं है क्योंकि घट-घट में निवास करने वाली सर्व शक्तिवान माँ, सबकी मनोकामनायें पूर्ण रूप से जानती हैं तथा यथा योग्य उन्हें पूरी भी करती हैं। यद्यपि ईश्वरीय विधान के अनुसार कोई प्रारब्ध टल नहीं सकता फिर भी आत्म कल्याण के लिये की हुई साधना नितान्त निष्फल नहीं हो जाती। किसी न किसी प्रकार से साधक को लाभ अवश्य पहुँचाती है। पृथ्वी में [illegible] सीधा बीजारोपण करने पर, सूर्य के प्रकाश में कुछ न कुछ तो अंकुर [illegible] ही हैं। अतः हे गायत्री परिजनों! आप सभी श्री गायत्री जी के प्रचार [illegible] में निष्काम भाव से जुट पड़ो क्योंकि यही तुम्हारा पावन कर्त्तव्य हैं। उठो! जागो!!

श्री गायत्री देवमाता, विश्वमाता एवं ज्ञान-विज्ञान की जननी है। अर्थात् श्री गायत्री ब्रह्म विद्या है। जो कि समस्त ज्ञान-विज्ञान की दाता है।

वर्तमान में हम जिन विषयों को विज्ञान, गणित, खगोल, भूगोल एवं योग विद्या आदि नामों से जानते हैं, प्राचीन काल में हमारे ऋषि-मुनि इन विषयों के केन्द्र बिन्दु को ब्रह्म विद्या कहते थे। जिसमें अण्ड, पिण्ड, ब्रह्माण्ड और सृष्टि विकास का सम्पूर्ण ज्ञान भरा हुआ था। किन्तु यह दुरूह विद्या श्री गायत्रीजी के साधकों को बड़ी सरल रीति से बोधगम्य हो जाती है। इसी लिये श्री गायत्री जी को समस्त ज्ञान-विज्ञान की जननी माना है। गायत्री महामंत्र परमात्मा की स्फुरणा के द्वारा तथा ऋषि मुनियों की तपस्या से हमें परम्परागत प्राप्त हुआ है यह महामंत्र अनन्त फलदाता है। यह हमारा सौभाग्य है कि पूज्य गुरुदेव की कृपा से इस मंत्र की उपासना करके अपने जीवन को सार्थक बनाने का अवसर प्राप्त हुआ है।

> गायत्रेव तथो योगः साधनं ध्यान मुच्यते।
> सिद्धिना सामातनातः किंचिद वृहत्तरम्॥

श्री गायत्री ही तप है, योग और साधन है। श्री गायत्री ही ध्यान और तेज है तथा समस्त सिद्धियों की दाता हैं।

आरती गायत्री जी की

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता ।
आदि शक्ति तुम अलख निरंजन जग पालन कर्त्री ।
दुःख शोक भय क्लेश कलह दारिद्रय दैन्य हर्त्री ।।
ब्रह्म रूपिणी, प्रणति पालिनी, जगद्धातृ अम्बे ।
भवभयहारी, जनहितकारी, सुखदा जगदम्बे ।।
भय हारिणि भव तारिणि अनघे, अज आनन्द राशी ।
अविकारी, अघहरी, अविचलित, अमले, अविनाशी ।।
कामधेनु सतचित आनन्दा जय गंगा गीता ।
सविता की शाश्वती शक्ति तुम सावित्री सीता ।।
ऋग, यजु, साम, अथर्व प्रणयिनी, प्रणव महामहिमे ।
कुण्डलिनी सहस्रार, सुषुम्ना शोभा गुण गरिमे ।।
स्वाहा, स्वधा, शची, ब्रह्माणी, राधा, रुद्राणी ।
जय सतरूपा वाणी, विद्या, कमला कल्याणी ।।
जननी हम हैं दीन हीन दुःख दारिद के घेरे ।
यदपि कुटिल कपटी कपूत तऊ बालक हैं तेरे ।।
स्नेह सनी करुणामयि माता चरण शरण दीजे ।
विलख रहे हम शिशु सुत तेरे दया दृष्टि कीजे ।।
काम, क्रोध, मद, लोभ, दम्भ, दुर्भाव, द्वेष हरिये ।
शुद्ध बुद्धि, निष्पाप हृदय, मन को पवित्र करिये ।।
तुम समर्थ सब भाँति तारिणी, तुष्टि पुष्टि त्राता ।
सत मारग पर हमें चलाओ जो है सुखदाता ।।
जयति जय गायत्री माता । जयति जय गायत्री माता ।।

युग निर्माण योजना, मथुरा–281003 (यू. पी.)